लालबहादुर शास्त्री

वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी

हमारे प्रधानमंत्री

लाल बहादुर शास्त्री

वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी

किरण प्रकाशन
२७, दरियागंज, दिल्ली

लालबहादुर शास्त्री

वीरेन्द्रमोहन रतूड़ी

प्रकाशक :
किरण प्रकाशन
३७ दरियागंज
दिल्ली

मुद्रक :
नवीन प्रेस
दरियागंज
दिल्ली

प्रथम संस्करण
१९६४

मूल्य : २.००

१ | परिचय

चेहरे पर हलकी-सी मुसकान, आँखों में अपनापन, छोटा कद और खद्दर का सफेद धोती-कुरता - यह हैं हमारे नये प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री।

शास्त्रीजी का पूरा जीवन संघर्ष, त्याग और तपस्या का जीवन रहा है। वह बहुत सादगी से रहते हैं, मीठा बोलते हैं और अपना काम बहुत ईमानदारी तथा मेहनत से करते हैं। घमण्ड और लोभ तो उन्हें छू तक नहीं गया है।

शास्त्रीजी ने देश के लिए हमेशा एक कर्मठ सिपाही की तरह काम किया। जब गांधीजी देश को स्वतन्त्र करने के लिए अंग्रेजों से लङ रहे थे, तब शास्त्रीजी उनके साथ एक कर्मठ सिपाही की तरह रहे। स्वतन्त्रता पाने के बाद जब हमारे प्रिय नेता तथा स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने देश की उन्नति का बीङा उठाया, तब भी शास्त्रीजी उनके साथ एक सिपाही की तरह काम करते रहे। आज देश की स्वतन्त्रता और निर्माण का यही सिपाही हमारा सिपहसालार है, आज देश की बाग- डोर उनके हाथ में है।

शास्त्रीजी ने अपने उदाहरण से सिद्ध कर दिया है कि छोटे-से- छोटा आदमी भी लगन और मेहनत से कितने बङे पद तक पहुँच सकता है।

नेहरूजी को शास्त्रीजी पर बहुत भरोसा था। इसीलिए वे शास्त्रीजी को हमेशा अपने साथ रखते थे। नेहरूजी ने अपने अन्तिम दिनों में तो अपना सारा काम शास्त्रीजी पर छोड़ दिया था।

शास्त्रीजी का स्वभाव इतना मीठा है कि सभी लोग उनकी प्रशंसा करते हैं। उनसे सैकड़ों आदमी रोज मिलते हैं और अपनी कठिनाइयाँ तथा मुसीबतें बताते हैं। शास्त्रीजी बड़े धैर्य से उनकी बातें सुनते हैं और

उनकी भरसक सहायता करते हैं।

जन्म

हमारे देश में २ अक्तूबर का बहुत महत्व रहा है। गांधीजी का जन्म २ अक्तूबर १८६९ को हुआ और वह हमारे राष्ट्रपिता रहे। श्री लालबहादुर शास्त्री का जन्म भी २ अक्तूबर १९०४ को हुआ और आज वह हमारे प्रधानमन्त्री हैं।

शास्त्रीजी ने वाराणसी जिले के मुगलसराय में जन्म लिया। उनके पिता का नाम श्री शारदा प्रसाद था। वह पहले एक स्कूल में अध्यापक थे, बाद में उन्होंने सरकारी नौकरी कर ली थी। वह भी बहुत सीधे-सादे और ईमानदार व्यक्ति थे।

शास्त्रीजी की माता का नाम श्रीमती रामदुलारी देवी है। वह इस समय ८१ वर्ष की हैं।

'नन्हा' खो गया

शास्त्रीजी को बचपन में नन्हा कहते थे। जब वह तीन महीने के थे, तब उनके साथ एक अनोखी घटना हो गयी।

बात यह हुई कि गंगाजी के घाट पर शास्त्रीजी को उनकी माताजी

S. K. SINHA

नहला रही थीं। इस बीच नहाने वालों की भीड़ की धक्कामुक्की में वह गिर पड़ीं और 'नन्हा' उनके हाथ से छूट गया। माताजी ने बहुत ढूंढा, पर 'नन्हा' नहीं मिला। वह रोती रहीं और अपने बच्चे को ढूंढती रहीं।

लेकिन 'नन्हा' बड़ा सौभाग्यशाली निकला। वह पानी में तो गिरा, लेकिन निकट ही एक टोकरी में जाकर अटक गया।

यह टोकरी एक ग्वाले की थी। उसने जब टोकरी में बच्चे को पड़ा देखा तो समझा कि गंगा मैया ने खुश होकर उसे पुत्र दिया है। वह खुशी-खुशी 'नन्हे' को अपने घर ले गया।

इस बीच माताजी रोती-बिलखती घर-घर अपने 'नन्हे' को ढूंढ़ती हुई, उस ग्वाले के घर भी पहुँचीं। वहाँ उन्होंने अपना 'नन्हा' देखा तो बहुत खुश हुईं। उन्होंने ग्वाले से अपना बच्चा माँगा, लेकिन ग्वाले ने साफ ना कह दिया। वह 'गंगा मैया की इस देन को' नहीं देना चाहता था।

माताजी रोती-कलपती लौट आयीं। फिर बड़ी मुश्किल से पुलिस की मदद से उन्हें अपना 'नन्हा' मिल सका। अपने लाड्ले को पाकर माताजी घर पहुंचीं।

उस समय कौन जानता था कि यही 'नन्हा' एक दिन भारत का प्रधानमन्त्री बनेगा। लेकिन जो होनहार है वह होकर ही रहती है।

शिक्षा

शास्त्रीजी जब केवल डेढ़ वर्ष के थे, तभी उनके पिता श्री शारदा प्रसादजी की मृत्यु हो गयी। उनकी मृत्यु के बाद माता रामदुलारी अपने एक पुत्र और दो पुत्रियों को लेकर अपने पिता के घर चली गयीं। इस प्रकार शास्त्रीजी तथा उनकी दो बहिनों को उनके नानाजी ने ही पाला और पढ़ाया।

शास्त्रीजी की आरम्भिक शिक्षा वाराणसी के हरिश्चन्द्र स्कूल में हुई। प्रायः यह होता है कि जब पिता नहीं रहते, तब बच्चे बहुत बिगङ जाते हैं। लेकिन शास्त्रीजी के साथ ऐसा नहीं हुआ। उन्हें बचपन से ही अपनी जिम्मेदारी समझने का ज्ञान हो गया था। वह स्कूल में बहुत गम्भीर स्वभाव के माने जाते थे।

तैर कर गंगा पार

शास्त्रीजी का बचपन बहुत गरीबी में बीता। फिर भी वह बङी लगन और मेहनत से पढ़ाई करते रहे।

शास्त्रीजी गंगा के दूसरी ओर रहते थे। उन्हें हर रोज गंगा पार करके विद्यालय जाना पङता था। कई बार तो उनके पास नाव का भाङा देने के लिए पैसे नहीं रहे। तब वह तैर कर ही गंगा पार करते थे।

गांधी की आंधी

फिर सन् १९२१ में देशभर में गांधी की आंधी आयी। उन्होंने देश के नौजवानों को स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के लिए ललकारा।

देशभर में सविनय कानून भंग अन्दोलन चल पङा। हजारों नौज- वान स्कूल-कॉलेज छोङकर गांधीजी के साथ हो गये, देश की स्वतन्त्रता के लिए जी-जान से लङने।

गांधीजी वाराणसी भी पहुँचे। वहाँ उन्होंने नौजवानों को ललकारा - "भारत माता दासता की बेङियों में जकङी है। जरूरत है नौज- वानों की, जो इन बेङियों को काटने के लिए सब-कुछ बलिदान कर दें।"

गांधीजी की इस ललकार से शास्त्रीजी फङक उठे। उस समय वह १६-१७ वर्ष के थे। वह भी स्कूल छोङकर स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पङे।

उधर अंग्रेज स्वतन्त्रता-संग्राम के आन्दोलन को कुचलने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने एक-एक को पकङ्कर जेल में ठूंसना शुरू कर दिया। उन्होंने कुल तीस हजार सत्याग्रही पकङे।

शास्त्रीजी भी पकङ लिए गये। लेकिन इनका कद बहुत छोटा था। पुलिस ने समझा कि यह बच्चा गलती से चला आया। उसने उन्हें पुलिस गाङी से उतार दिया।

परन्तु बाद में पुलिस ने देखा स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग ले रहा है। उसने शास्त्रीजी को पकङ्कर जेल में जेल में रहे। कि यह बच्चा तो बङी कर्मठता से उसे अपनी गलती महसूस हुई। तब बन्द कर दिया। वह ढाई वर्ष तक

फिर पढ़ाई

जेल से छूटने के बाद शास्त्रीजी वाराणसी के काशी विद्यापीठ में भरती हो गये। इस विद्यापीठ की भी अपनी कहानी है।

गांधीजी की ललकार पर अनेक जेल गये थे। जेल से छूटने के बाद उन्हें सका। हैडमास्टर लोग इन नौजवानों को नौजवान अपनी पढ़ाई छोङ्कर स्कूलों में दाखिला नहीं मिल भरती करने में बहुत घबराते थे। उन्हें डर रहता था कि इससे कहीं अंग्रेज नाराज न हो जाएँ। इसलिए वे इन नौजवानों को भरती नहीं करते थे।

अतः कुछ देशभक्तों ने इन नौजवानों के लिए वाराणसी में एक राष्ट्रीय विद्यालय खोला, जिसका नाम काशी विद्यापीठ रखा गया। इस विद्यापीठ में भारतीय तरीके से पढ़ाई का प्रबन्ध किया गया। इसमें डॉ० भगवान दास, आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ० सम्पूर्णानन्द जैसे विद्वान अध्यापक

रहे । शास्त्रीजी भी इसी विद्यापीठ में भरती हो गये । यहीं उन्होंने इन विद्वानों से पढ़ा और ज्ञान प्राप्त किया।

उस समय शास्त्रीजी को केवल ढाई रुपए महीने पर गुजर चलानी पड़ती थी। कई बार तो वह एक ही समय भोजन करके रह जाते थे।

इस प्रकार कठोर परिश्रम और लगन से उन्होंने १६२५ में प्रथम श्रेणी में 'शास्त्री' की उपाधि प्राप्त की। तब से सभी लोग प्रेम से उन्हें 'शास्त्रीजी' कहने लगे।

हरिजनों की सेवा

पढ़ाई समाप्त करने के बाद शास्त्रीजी हरिजनों की सेवा में लग गये। हरिजनों के उत्थान के लिए वह जी-जान से काम करने लगे।

वह केवल नारेबाजी में विश्वास नहीं करते थे । उन्होंने गाँव-गाँव में घूमकर हरिजनों के उत्थान का प्रचार किया। वह सवर्ण हिन्दुओं से कहते रहे कि वे हरिजन बच्चों को अपने स्कूलों में लें, जिससे वे बच्चे

पढ़-लिखकर समझदार बन सकें।

शास्त्रीजी की इस लगन को देखकर गांधीजी बहुत प्रभावित हुए थे।

उस समय पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने हरिजनों और दलितों के उद्धार के लिए लोक सेवक मंडल बनाया था। लालाजी ने शास्त्रीजी की लगन देखकर उन्हें मंडल का आजीवन सदस्य बना दिया।

मंडल से शास्त्री जी का अब तक अटूट सम्बन्ध बना हुआ है। अब वह इसके अध्यक्ष हैं।

विवाह

शास्त्रीजी लगभग २३ वर्ष के थे। वह गांधीजी के पक्के चेले हो चुके थे। देश-सेवा, त्याग, ईमानदारी, कर्मठता और सादगी उनके जीवन के मूलमंत्र बन गये थे।

उनके विवाह का प्रबन्ध हुआ। ससुर सम्पन्न व्यक्ति थे। विवाह के अवसर पर दहेज में उन्होंने अनेक उपहार रख दिए। शास्त्री जी ने एक भी चीज लेने से साफ इंकार कर दिया।

ससुर महोदय ने बहुत जिद की। शास्त्रीजी तो गांधीजी के चेले थे। उन्होंने केवल एक चरखा और कुछ गज खादी लेनी स्वीकार की।

ससुर महोदय ने खुशी से चरखा और खादी दी, और फिर कुछ और देने की जिद करने लगे। तब शास्त्रीजी ने गांधीजी का अन्तिम उपाय इस्तेमाल किया। उन्होंने तत्काल सत्याग्रह करने का नोटिस देते हुए कहा, "यदि दहेज में मुझे और कुछ दिया गया तो मैं ऐसे ही लौट जाऊँगा।"

बेचारे ससुर महोदय बहुत घबराए। फिर तो बिना दहेज के ही गांधीजी के चेले शास्त्रीजी का विवाह हो गया।

शास्त्रीजी की धर्मपत्नी का नाम श्रीमती ललितादेवी है। वह आदर्श हिन्दू नारी हैं। घर की देखभाल और पति की सेवा करना ही वह अपना मुख्य कर्तव्य मानती हैं। घर पर उनके तीन मुख्य काम हैं-भग- वान शिव की पूजा करना, पति की देखभाल करना और परिवार के लिए रसोई तैयार करना।

ललितादेवी जी की उम्र अब ५३ वर्ष की है। वह हर रोज रात को दो बजे उठ जाती हैं, नहाती हैं और ६ बजे सुबह तक पूजा करती हैं। इसके बाद घर के अन्य कामों में लग जाती हैं।

२ | प्रयाग यात्रा

लोक सेवक मंडल में शास्त्रीजी बहुत लगन और मेहनत से काम करते रहे। १७ नवम्बर, १९२८ को लाला लाजपतराय तथा पुरुषोत्तम- दास टण्डन इस मण्डल के अध्यक्ष बने।

टण्डनजी प्रयाग (इलाहाबाद) में रहते थे। वह शास्त्रीजी की कर्मठता पहले ही देख चुके थे। अतः उन्होंने मंडल का काम करने के लिए शास्त्रीजो को इलाहाबाद बुला लिया।

इस तरह शास्त्रीजी अपनी धर्मपत्नी सहित वाराणसी से इलाहा- बाद चले आये।

प्रयाग आकर शास्त्री जी तन-मन से देश की सेवा में लग गये। कहा जा सकता है कि प्रयाग आते ही उन्होंने अपना जीवन देश को अर्पित कर दिया।

पत्नी से वचन लिया

लाला लाजपतराय के शहीद होने के बाद पंजाब भर में मार्शल ला लागू हुआ था। देश भर में स्वयंसेवक भरती करके वहाँ भेजे जा रहे थे। शास्त्रीजी भी जाने के लिए तैयार हो गये। सब जानते थे कि इस समय जो पंजाब जाएगा, वह जीवित नहीं लौट पाएगा। शास्त्रीजी का

शास्त्रीजी की धर्मपत्नी श्रीमती ललिता देवी

उस समय नया- नया विवाह हुआ था। उनकी पत्नी श्रीमती ललिता-देवी ने बहुत रोका, लेकिन शास्त्रीजी अपने निश्चय पर अडिग रहे।

इस बीच सूचना मिली कि अब स्वयंसेवक पंजाब न भेजे जाएँ। अतः शास्त्रीजी भी रुक गए, लेकिन उन्होंने उसी दिन अपनी पत्नी से वचन ले लिया कि वह उन्हें स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने से कभी भी नहीं रोकेंगी, चाहे कुछ क्यों न हो जाए।

ललितादेवी ने शास्त्रीजी को वचन दिया और फिर हमेशा अपने वचन को निभाती रहीं।

प्रयाग में सेवा-कार्य

प्रयाग में रहकर शास्त्रीजी राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगे। वह ७ साल तक प्रयाग नगरपालिका और ४ साल तक इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के सदस्य रहे।

वह १९३० से १९३५ तक प्रयाग जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा सचिव भी रहे। १९३७ में वह उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव नियुक्त हुए। उसी वर्ष वह उत्तर प्रदेश की धारासभा के भी सदस्य चुने गए।

इस अवधि में शास्त्रीजी श्री जवाहरलाल नेहरू, राषि पुरुषोत्तमदास टण्डन, पं० गोविन्द वल्लभ पन्त जैसे महान नेताओं के सम्पर्क में आये। इन नेताओं ने शास्त्रीजी के काम की बहुत प्रशंसा की।

शास्त्रीजी का बचपन बहुत गरीबी में बीता था। उन्हें काफी संघर्ष करना पङा। अब भी वह गरीबी और गुलामी से लङ रहे थे। इस- लिए देश सेवा करते हुए उनका सबसे अधिक ध्यान गरीबों तथा दीन-हीन लोगों की ओर रहा।

उन्होंने हरिजनों के उत्थान के लिए बहुत काम किया। उनकी लगन को देखकर गांधी जी ने भी उनकी बहुत प्रशंसा की।

फिर जेल में

सन् १९४०-४१ में देशभर में व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू हुआ। पहले के सत्याग्रहों में और इसमें एक अन्तर था। पहले के सत्याग्रहों में सब लोग मिलकर सत्याग्रह करते थे और जेल जाते थे। लेकिन, व्यक्ति- गत सत्याग्रह में हरेक व्यक्ति को अलग-अलग सत्याग्रह करना था। उसे पहले मजिस्ट्रेट को सूचना दे देनी पङती थी। सत्याग्रह करने के लिए पकङे जाने पर वह जेल जाता था और जेल से छूटने के बाद उसे फिर सत्याग्रह करना पङता था। इस प्रकार वह तब तक लगातार सत्याग्रह करता और जेल जाता था, जब तक कांग्रेस इस सत्याग्रह को बन्द न कर दे।

इस प्नकार यह सत्याग्रह बहुत कठिन था। इसलिए इसमें उसी

को भेजा जाता था, जो तन-मन-धन से सत्याग्रही हो, जो अपने काते सूत के कपडे पहनता हो और जो छुआ-छूत न मानता हो।

अतः इस सत्याग्रह में भाग लेने के लिए गांधीजी की अनुमति लेनी पडती थी। शास्त्रीजी को यह सत्याग्रह करने की अनुमति मिल गयी। फलस्वरूप शास्त्रीजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह किया और जेल गये। उन्हें एक वर्ष की जेल की सजा हुई। लेकिन सजा पूरी होने से पहले ही अंग्रेज सरकार ने बहाना बनाकर सत्याग्रहियों को छोड दिया। शास्त्रीजी भी छोड दिए गये।

पुत्री की मृत्यु

उन दिनों स्वतन्त्रता के इन दीवानों के ऊपर हर समय संकट के बादल मंडराया करते थे। किसी को भी पता नहीं रहता था कि कब वह गिरफ्तार कर लिया जाए। उन दिनों स्वतन्त्रता के लिए लडना और जेल जाना ही इन लोगों का मुख्य काम हो गया था।

ऐसी स्थिति में घर की हालत का खराब होना मामूली बात थी। वे न तो कुछ कमा सकते थे और न घर की देख-भाल कर सकते थे।

शास्त्रीजी की यही हालत थी। दिन बडी गरीबी से गुजर रहे थे। जब शास्त्रीजी जेल में रहते तब उनकी पत्नी ही बडी हिम्मत से घर की देखभाल करतीं।

शास्त्रीजी सातवीं बार जेल गये थे। घर की हालत बडी खराब थी। तभी उनकी डेढ़ साल की लडकी मंजु को टाइफाइड हो गया। घर में एक भी पैसा नहीं था। बेचारी लडकी दवा के बिना तडफकर मर गयी। ललितादेवी जी आज भी उन दिनों की याद करके रो पडती हैं।

लेकिन इतने दुख और संकट होने पर भी शास्त्रीजी अपने कर्तव्य

से पीछे नहीं हटे। उन्होंने स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करने का जो संकल्प कर लिया था, उसे अन्त तक निभाते रहे।

'भारत छोड़ो' आन्दोलन

और फिर १९४२ में आजादी के दीवानों ने फिर जोरदार आन्दो- लन छेड़ दिया।

शास्त्रीजी के पिता स्व० श्री शारदाप्रसाद

महात्मा गांधी और उनके अनु- यायियों ने ८ अगस्त, १९४२ की रात को घोषणा की, 'अंग्रेजों, भारत छोड़ो' । गांधीजी ने देशवासियों को 'करो या मरो' का मन्त्र दिया। अर्थात् या तो स्वतन्त्रता प्राप्त करो या स्वतन्त्रता के संग्राम में लड़ते- लड़ते मर जाओ। गांधीजी ने देश

की जनता को ललकार कर कहा- "एक मन्त्र है, छोटा-सा, जो मैं तुम्हें देता हूँ। इसे तुम अपने दिलों में अंकित कर लो और अपनी हर साँस के साथ इसे याद करो। यह मन्त्र है 'करो या मरो' । हम या तो भारत को स्वतन्त्र करेंगे या इसी प्रयत्न में मर जाएँगे । हम अपनी गुलामी देखने के लिए जीवित नहीं रहेंगे। यही तुम्हारा संकल्प होना चाहिए।"

शास्त्रीजी को माताजी श्रीमती रामदुलारी देवी

अंग्रेजों में घबराहट फैल गयी। वे जानते थे कि इस बार गांधी की यह आँधी उन्हें भारत से बाहर उड़ाकर ही चैन लेगी। अतः रातों-रात उन्होंने योजना बनायी। और ९ अगस्त की सुबह को अभी सूरज की पहली किरण भी नहीं फूटी थी कि सभी बड़े-बड़े नेता गिरफ्तार कर लिये गए । महात्मा गांधी बिड़ला हाउस में थे। रात को ही पुलिस ने बिड़ला हाउस घेर लिया और सुबह के ५ बजते ही वे दीवारें फाँदकर अन्दर घुस गये । गांधीजी नाश्ता कर चुके थे। पुलिस के पहुँचते ही उन्होंने अपने

साथियों से 'वैष्णव जन तो तेने कहियो, जो पीर परायी जाने रे,' भजन गवाया और फिर पुलिस के साथ चल दिये।

गांधीजी के साथ ही जननेता श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री गोविन्द- वल्लभ पन्त, राषि पुरुषोत्तमदास टण्डन, सरदार पटेल, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना आजाद, श्रीमती सरोजनी नायडू आदि सभी नेताओं को नजरबन्द कर दिया गया। शास्त्रीजी भी गिरफ्तार हुए।

देशभर में सनसनी फैल गयी। जगह-जगह सैकङों लोग नारे लगाते, 'अंग्रेजो, भारत छोङो', 'महात्मा गांधी की जय' और 'इन्कलाब जिन्दावाद'। हजारों गिरफ्तार होते, फिर दूसरे दिन उनके स्थान पर हजारों लोग नारे लगाने आ जाते।

सन् १८५७ के बाद यह दूसरा अवसर था, जब देशभर में अंग्रेजी राज के विरुद्ध इतना व्यापक आन्दोलन हुआ। आजादी की लौ बहुत तेज जल उठी थी, देश का बच्चा-बच्चा आजादी का दीवाना बन चुका था। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक और गुजरात से लेकर बंगाल तक क्रान्ति की लहर फैल चुकी थी।

हजारों लोग गिरफ्तार हुए, हजारों पुलिस की गोलियों से मारे गये और हजारों लोगों ने अंग्रेज राज्य को विफल करने के लिए तोङ-फोङ की। अंग्रेजों का शासन डगमगा उठा।

रिहाई

अंग्रेज समझ गये कि अब वे अधिक समय तक भारत पर राज्य नहीं कर सकेंगे। इसलिए वायसराय ने देश के नेताओं को बात करने के लिए शिमला बुलाया। इसी सिलसिले में सभी नेता जेल से रिहा कर दिये गये।

शास्त्रीजी भी जुलाई, १९४५ में जेल से रिहा हुए।

इस प्रकार वह स्वतन्त्रता से पहले ८ बार जेल गये और उन्होंने लगभग ६ वर्ष की सजा काटी।

उत्तर प्रदेश विधानसभा में

सन् १९४६ में अन्तरिम सरकार बनाने के लिए देशभर में चुनाव हुए। शास्त्रीजी उत्तर प्रदेश विधानसभा के लिए चुने गये।

इस समय तक गांधीजी तथा अन्य सभी बडे-बडे नेता शास्त्रीजी से प्रभावित हो चुके थे। उन्होंने देख लिया था कि शास्त्रीजी बहुत बडे देशप्रेमी, त्यागी, लगनशील और कर्मठ नेता हैं।

उस समय उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री गोविन्दवल्लभ पन्त थे। उन्होंने शास्त्रीजी को अपना सभा-सचिव नियुक्त किया।

इसके बाद १५ अगस्त, १९४७ को देश स्वतन्त्र हो गया। दुर्भाग्य से देश के दो टुकडे करने पडे। एक टुकडा पाकिस्तान बना और दूसरा भारत।

भारत में धूमधाम से आजादी मनायी गयी। शास्त्रीजी ने सभा- सचिव के पद पर बहुत अच्छा काम किया था। फलतः पन्तजी ने उन्हें परिवहन और पुलिस मन्त्री नियुक्त किया।

३ | नेहरूजी के साथ

सन् १९५१ में श्री जवाहरलाल नेहरू अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गये। वे शास्त्रीजी की संगठन शक्ति और कर्मठता देख चुके थे। उन्होंने शास्त्रीजी को अपना महासचिव बनाया।

तब शास्त्रीजी उत्तर प्रदेश से पुलिस मन्त्री का पद छोड़कर दिल्ली चले आये।

सन् १९५२ में वह फिर उत्तर प्रदेश की विधानसभा के लिए चुने गये। लेकिन नेहरूजी ने उनसे इस्तीफा दिलवा दिया और दिल्ली बुला लिया। यहाँ वह राज्यसभा के लिए चुने गये और नेहरूजी ने उन्हें अपना परिवहन और रेल मन्त्री बनाया।

रेल मन्त्री के पद पर शास्त्रीजी ने बहुत प्रशंसनीय कार्य किये। उन्होंने गरीब यात्रियों की भलाई के लिए जनता गाड़ी चलवायी। अनेक नये रेल-स्टेशन खुलवाये, हजारों मील लम्बी रेल लाइनें बिछवाईं, देश में ही रेल इंजन तथा डिब्बे बनवाने के कारखाने लगवाये और तीसरे दर्जे के गरीब यात्रियों की सुविधाओं के लिए अनेक कार्य किये।

शास्त्रीजी की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि वह तुरन्त निर्णय कर लेते हैं। वह चाहते हैं कि जो काम करना है, वह जल्दी ही कर दिया जाना चाहिए।

डेढ़ जलेबी

एक बार शास्त्रीजी मुरैना गये। वहाँ के लोगों ने माँग की कि मुरैना स्टेशन के ऊपर यात्रियों के आने-जाने के लिए पुल बनवा दिया जाए।

शास्त्रीजी रेल-अधिकारियों के साथ उस स्थान की जाँच करने गये।

जाँच करने पर उन्हें लगा कि पुल बनवाना जरूरी है। अतः उन्होंने रेल-अधिकारियों को पुल बनवाने के लिए तुरन्त आदेश दे दिये। इसके बाद जलपान हुआ। जलपान में जलेबियाँ थीं। शास्त्रीजी ने एक पूरी जलेबी खायी और एक आधी। शाम को आम सभा थी। शास्त्रीजी को भाषण देना था। इस अवसर पर शास्त्रीजी मजाक करने से नहीं चूके। उन्होंने भाषण देते हुए कहा, "मुरैना वाले बडे होशियार हैं। डेढ़ जलेबी खिलाकर पुल के लिए डेढ़ लाख रुपया ले बैठे।" शास्त्रीजी की इस चुटकी से सभी लोग हँस पडे।

अनूठा उदाहरण

इसी बीच एक घटना हो गयी। नवम्बर, १९५६ में अरियालूर (महबूब नगर) में भीषण रेल दुर्घटना हुई, जिसमें लगभग १५० आदमी मर गये। शास्त्रीजी ने इसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली और अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

रेल-दुर्घटना की जिम्मेदारी रेल-कर्मचारियों पर होती है। इस दुर्घटना का सीधा सम्बन्ध रेलमंत्री से नहीं था। फिर भी रेलमंत्री होने के कारण कुछ जिम्मेदारी तो उनकी थी ही। इसलिए उन्होंने पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और इस्तीफा दे दिया।

इस रेल-दुर्घटना और शास्त्रीजी के इस्तीफे पर संसद में बहस हुई। २७ नवम्बर, १९५६ में इस बहस के उत्तर में शास्त्रीजी ने कहा, "शायद मेरा कद छोटा होने और मीठा बोलने के कारण लोग यह धारणा बना लेते हैं कि मैं कोई सख्त कदम नहीं उठा सकता। बेशक मैं शरीर से इतना पुष्ट नहीं हूँ, लेकिन मन से किसी भी प्रकार कमजोर नहीं हूँ।"

शास्त्रीजी की इस दृढ़ता को देखकर नेहरूजी को उनका इस्तीफा मंजूर करना पड़ा। उस समय नेहरूजी ने कहा, "मैं श्री लालबहादुर शास्त्री का इस्तीफा इसलिए मंजूर नहीं कर रहा हूँ कि जो रेल-दुर्घटना हुई, उसके लिए यह किसी तरह जिम्मेदार हैं, बल्कि उनका इस्तीफा इस- लिए मंजूर कर रहा हूँ, जिससे संविधान में आचरण का एक उदाहरण कायम हो सके।"

इस प्रकार शास्त्रीजी ने देश तथा मंत्रियों के सामने अनूठा उदाहरण पेश किया। यही नहीं, इस्तीफा मंजूर होने के बाद जब वह संसद भवन से घर लौटे तो उन्होंने सरकारी कार नहीं ली। वे पैदल बस स्टैण्ड तक गये और वहाँ से बस पकड़ी।

शास्त्रीजी अब तक अपने मीठे स्वभाव और ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध थे, इस इस्तीफे से लोगों को पता चल गया कि वह अपने संकल्प और कानून के कितने पक्के हैं।

संचार और परिवहन मंत्री

सन् १९५७ में दूसरे आम चुनाव हुए। श्री लालबहादुर शास्त्री फिर इलाहाबाद से लोकसभा के लिए चुन लिये गये।

इस समय तक स्व० प्रधानमंत्री श्री नेहरूजी उनकी प्रतिभा और कार्यकुशलता से अच्छी तरह परिचित हो चुके थे। वह जान गये कि

शास्त्रीजी बहुत शान्त, गम्भीर और मृदुल स्वभाव के हैं, लेकिन साथ ही बहुत समझदार और अपनी लगन के सच्चे हैं। इसलिए उन्होंने शास्त्रीजी को मई, १९५७ में केन्द्रीय संचार और परिवहन मंत्री बनाया।

शास्त्रीजी ने इस मन्त्रालय में भी अनेक बडे-बडे काम किये। उस समय तक हमारे देश में जहाज बनाने का कोई प्रबन्ध नहीं था। शास्त्रीजो ने विशाखापत्तनम् में जहाज बनाने का यार्ड बनवाया।

इस बीच देश में महंगाई बढ़ने लगी। डाक-तार विभाग के कर्मचारियों ने वेतन बढ़ाने की माँग की। उन्होंने धमकी दी कि अगर वेतन नहीं बढ़ाया गया तो वे हड्ताल कर देंगे।

अगर डाक-तार विभाग में हड्ताल हो जाती तो देश का बहुत नुकसान होता। अनेक काम रुक जाते और बहुत अव्यवस्था हो जाती। शास्त्रीजी ने अपनी सूझ-बूझ और धैर्य से डाक तार विभाग के कर्मचारियों से बात की। उन्होंने ऐसा रास्ता निकाला, जिससे कर्मचारी भी संतुष्ट हो गये और सरकार का भी अहित नहीं हुआ।

वाणिज्य और उद्योग मन्त्री

इसके बाद मार्च, १९५८ में शास्त्रीजी वाणिज्य और उद्योग- मन्त्री बनाये गये। इस मन्त्रालय में भी उन्होंने अपनी सूभ-बूझ और बुद्धि से अनेक लाभदायक काम किये।

उन्होंने देश में नये-नये उद्योग और बडे-बडे कल-कारखाने खुलवाये। उन्होंने देश में उत्पादन बढ़वाया और ऐसी व्यापार-नीति बनायो, जिससे विदेशों को हमारा काफी अधिक माल जाने लगा। इससे देश में उद्योग-धन्धे बढ़े और विदेशी मुद्रा भी अधिक मिलने लगी।

शास्त्रीजी ने छोटे और घरेलू उद्योगों को भी बढ़वाया। उन्होंने

युवकों को व्यापार की ओर आकर्षित किया। उन्हें काम-धन्धे सीखने और सरकार से ऋण लेकर छोटे-छोटे उद्योग शुरू करने की प्रेरणा दी।

छोटा कद : छोटे सिक्के

शास्त्रीजी इतने बङे पद पर पहुँचने के बाद भी हमेशा की तरह सीधे-सादे रहे। उनका कद छोटा है। लेकिन इससे उन्हें कभी संकोच नहीं हुआ। वह अपने कद को लेकर बिना हिचकिचाहट के हमेशा हँसते और हँसाते रहे हैं।

उन दिनों नये सिक्कों का चलन शुरू हुआ था। नया पैसा बहुत हो छोटा बनाया गया था। उसे देखकर शास्त्रीजी को अपना कद याद आ जाता था।

एक बार वह कहीं भाषण दे रहे थे। नये सिक्कों की बात चल पङी, तो वह बोले, "मुझे नये सिक्के बहुत पसन्द हैं। मेरा अपना कद इतना छोटा है कि जो चीज छोटी होती है, वह मुझे बहुत प्रिय हो जाती है।"

गृह मन्त्री के पद पर

जब शास्त्रीजी वाणिज्य और उद्योग मन्त्री थे, तब स्व० गोविन्द वल्लभ पंत गृह मन्त्री थे। मार्च, १९६१ में पंतजी का निधन हो गया। इससे यह समस्या खङी हो गयी कि पंतजी के स्थान पर कौन गृह मन्त्री बनने लायक है। किसमें इतनी बुद्धि और कार्य-कुशलता है, जो इतने महत्त्वपूर्ण पद को संभाल सके।

उस समय स्व० प्रधानमन्त्री श्री नेहरू के दिमाग में केवल एक ही व्यक्ति का नाम आया और वह नाम था-श्री लालबहादुर शास्त्री।

श्री नेहरू जानते थे कि देश की समस्याएँ सुलझाने में शास्त्रीजी निपुण हैं। वे ही गृह मन्त्री के महत्त्वपूर्ण पद को सँभाल सकते हैं।

अतः उन्होंने ४ अप्रैल, १९६१ को शास्त्रीजी को गृह मन्त्रालय सौंप दिया।

गृह मन्त्री बनने के बाद शास्त्रीजी ने देश की समस्याओं को हल किया। उन्होंने अपने हँसमुख स्वभाव से किसी को भी नाराज नहीं किया। जहाँ तक हो सका उन्होंने सबकी सहायता की। नेहरूजी का उन पर बहुत विश्वास था। उस समय देश में अनेक समस्याएँ खड़ी हो रही थीं। शास्त्रीजी ने उन्हें अपनी दूरदर्शिता और अक्लमन्दी से बहुत अच्छी तरह हल किया।

असम में असमिया और बंगला भाषा के बारे में बहुत झगड़ा खड़ा हो गया था। भाषा के सवाल को लेकर वहाँ अनेक दंगे भी हो चुके थे। शास्त्रीजी तत्काल असम पहुँचे और वहाँ उन्होंने भाषा की समस्या को इतने सुन्दर ढंग से सुलझाया कि अब असमिया और बंगला का झगड़ा हमेशा के लिए समाप्त हो गया है।

नेपाल-यात्रा

सन् १९६३ के शुरू में भारत और नेपाल के बीच कुछ गलतफहमी हो गयो थी। शास्त्रीजी मार्च, १९६३ में नेपाल गये। वहाँ वह बड़े-बड़े नेताओं से मिले और उनसे भारत-नेपाल के सम्बन्धों पर बात की। शास्त्रीजी ने अपनी ओर की बातें बड़े साफ ढंग से रखीं; तब वहाँ के नेताओं की गलतफहमियाँ दूर हुई। वे समझ गये कि भारत उनका हित चाहनेवाला है। उन्हें इसका दुख हुआ कि उन्होंने भारत के बारे में बुरा क्यों सोचा। उनके मन से मैल निकल गया और वे फिर से भारत के मित्र हो गये।

इस प्रकार शास्त्रीजी ने नेपाल जाकर भारत और नेपाल की प्राचीन घनिष्ठ मित्रता को और भी घनिष्ठ बनाया।

इसी तरह शास्त्रीजी ने अपनी सूझ-बूझ और मधुर व्यवहार से देश की अनेक अन्य समस्याओं को भी हल किया।

कामराज योजना

जनता में कांग्रेस सरकार की बहुत कड़ी आलोचना हो रही थी। लोगों का कहना था कि बड़े-बड़े नेता अपनी कुर्सी छोड़ना नहीं चाहते। वे अपने पद के लोभ में जनता की परवाह नहीं करते।

इससे सरकार के सम्मान को बहुत ठेस पहुँच रही थी। तब मद्रास के मुख्यमन्त्री श्री कामराज नाडार ने सुझाव रखा कि देश के बड़े-बड़े मन्त्री अपने पदों से इस्तीफा दे दें और सरकार से बाहर रहकर देश के हित का कार्य करें।

स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू को श्री कामराज की यह योजना बहुत पसन्द आयी। इस योजना के अन्तर्गत शास्त्रीजी ने अगस्त १९६३ में इस्तीफा दे दिया। उनके अलावा अनेक अन्य बड़े-बड़े मन्त्रियों ने भी इस्तीफा दिया।

इस प्रकार शास्त्रीजी अगस्त, १९६३ में बिना किसी हिचकिचाहट के मन्त्री पद से अलग हो गये और कांग्रेस संगठन तथा देशहित का कार्य करने लगे।

वास्तव में शास्त्रीजी को लोभ छू तक नहीं गया है। नेहरूजी ने जब भी उन्हें कोई काम सौंपा, उन्होंने पूरी लगन से उस काम को किया। वह बिना किसी लोभ या स्वार्थ के अपना कर्तव्य निभाते रहते हैं। इसीलिए जब वह गृह मन्त्री थे, तब उन्होंने पूरे ध्यान से काम किया, और जब वह

इस्तीफा देकर अलग हो गये, तब भी वह पूरी लगन से देश के हित का काम करते रहे। यही कारण है कि नेहरूजी उन पर बहुत भरोसा करते थे।

शास्त्रीजी नेपाली बच्चों के साथ

४ | नेहरूजी के सहायक

जनवरी, १९६४ में भुवनेश्वर में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। अधि-वेशन में भाग लेते समय नेहरूजी अचानक बीमार पङ गये। उनके ऊपर काम का बहुत भार था। इसके अलावा चीन ने बहुत बङा मित्रघात किया था। नेहरूजी पर इन सब घटनाओं का बहुत बुरा असर पङा और वह बीमार पङ गये।

तब समझदार लोगों ने नेहरूजी को सुझाव दिया कि वह अपनी सहायता के लिए किसी अनुभवी नेता को ले लें।

नेहरूजी जानते थे कि नेताओं में केवल शास्त्रीजी ही ऐसे व्यक्ति हैं, जो उनके काम को अच्छी तरह समझते हैं और जिन पर पूरी तरह भरोसा किया जा सकता है। अतः उन्होंने २४ जनवरी, १९६४ को शास्त्रीजी को फिर अपने मन्त्रिमण्डल में ले लिया।

नेहरूजी ने उन्हें अपने सहायक रूप में लिया था, इसलिए उन्होंने शास्त्रीजी को कोई भी विभाग नहीं दिया। इस प्रकार शास्त्रीजी बिना विभाग के मन्त्री बने।

मन्त्री पद की शपथ ग्रहण करने के बाद शास्त्रीजी ने नेहरूजी से पूछा, "आज्ञा कीजिए, अब मैं क्या काम करूँ ?"

नेहरूजी ने अपनी थकित धीर-गम्भीर मुस्कान के साथ उत्तर

दिया, "मेरे सब काम।"

और इस प्रकार शास्त्रीजी पूरी लगन तथा मेहनत के साथ नेहरूजी के समस्त काम देखने में लग गये।

हजरतबल काण्ड

कश्मीर में बहुत पुरानी हजरतबल दरगाह है, वहाँ मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मुहम्मद का एक बाल रखा हुआ है। यह बाल काँच की नली में बन्द है। इसे बहुत पवित्र माना जाता है, और हर साल हजारों मुसलमान इसके दर्शन करने जाते हैं।

दिसम्बर १९६३ में कुछ शरारतियों ने इस बाल को चुरा लिया। वे इसे चुरा कर भारत को बदनाम करना चाहते थे और भारत के माथे पर कलंक लगाना चाहते थे।

पवित्र बाल की चोरी से देशभर में तहलका मच गया। पुलिस ने बड़ी चतुराई से पवित्र बाल का पता लगाया। तब चोरों ने उस बाल को चुपके से वहीं रख दिया, जहाँ से उन्होंने उसे चुराया था। बाल के मिलने से भारत कलंकित होने से बच गया।

लेकिन शरारतियों ने एक और चाल चल दी। उन्होंने अफवाह फैला दी कि यह बाल नकली है। इससे देश को बदनाम करने वाले फिर शोर मचाने लगे।

तब श्री लालबहादुर शास्त्री कश्मीर पहुँचे। उन्होंने घोषणा कर दी कि यह बाल बड़े-बड़े धार्मिक नेताओं को दिखाया जाएगा। वे ही इसका निर्णय करेंगे कि बाल असली है या नकली।

इससे देशभर में सनसनी फैल गयी। लोगों को डर हुआ कि कहीं बाल नकली सिद्ध न हो जाए। लेकिन शास्त्रीजी ने यह खतरा अपने ऊपर ले लिया।

अन्त में धार्मिक नेताओं को बाल दिखाया गया। उन्होंने बाल की जाँच की और घोषणा की कि बाल असली है।

चारों ओर खुशी की लहर छा गयी। लोग शास्त्रीजी की बुद्धिमानी और दूरदर्शिता की तारीफ करने लगे। यह उनकी ही बुद्धिमानी थी कि उन्होंने इस गभ्भीर समस्या को सुलझा दिया।

नेहरूजी का निधन

२७ मई, १९६४ को हमारे देश पर अचानक बिजली गिरी। नेहरूजी देहरादून में ४ दिन आराम करके २६ मई की शाम को दिल्ली लौटे। रात को काफी देर तक काम करने के बाद सोये।

२७ मई को सुबह वह जल्दी ही उठ गये। उन्होंने दाढ़ी बनायी और फिर नहाये। ठीक ६ बजकर २० मिनट पर उन्हें अपनी कमर में पीङा मालूम हुई। फौरन डॉक्टरों को बुलाया गया। तब तक नेहरूजी बेहोश हो गये। डॉक्टरों ने बहुत कोशिश की, लेकिन वे नेहरूजी को होश में न ला सके।

साढ़े ग्यारह बजते-बजते पूरी दिल्ली में खबर फैल गयी कि प्रधान- मन्त्री नेहरू यकायक बीमार पङ गये हैं।

देश के सभी नेता बेचैन हो उठे। सभी उनके घर को रवाना हुए। देश की महान विभूति बेहोश पङी थी। डाक्टर जी-जान से उपचार कर रहे थे। शास्त्री जी चिन्तित होकर उन्हें देख रहे थे।

लेकिन विधाता का विधान कोई नहीं टाल सकता। लगभग २ बजे वह महान ज्योति बुझ गयी - देश अन्धकारमय हो गया।

लेकिन चाहे, कितनी विपदा क्यों न आए, देश का शासन तो चलना ही चाहिए। कुछ समय बाद मन्त्रिमण्डल की बैठक हुई। सबसे वरिष्ठ मंत्री

श्री गुलजारीलाल नन्दा थे। अतः निर्णय हुआ कि जब तक नया नेता नहीं चुना जाता, तब तक श्री नन्दा प्रधानमन्त्री का पद सँभालेंगे। अतः नेहरूजी के बाद १३ दिन तक नन्दाजी प्रधानमन्त्री रहे।

सर्वसम्मति से नेता

सभी चाहते थे कि नया प्रधानमन्त्री सर्वसम्मति से चुना जाए। वह ऐसा नेता हो जो नेहरूजी की नीति का पालन करता हो और जो त्याग तथा सूझबूझ से देश को उन्नति की ओर ले जा सके।

तब बरबस सभी की निगाहें शास्त्रीजी की ओर टिक गयीं। वही एक ऐसे नेता थे, जिनमें महात्मा गांधी के समान त्याग-भावना, नेहरूजी के समान प्रतिभा और स्व० गोविन्द वल्लभ पन्त के समान कुशल प्रशासन शक्ति थी। निष्पक्ष नेता और आम जनता की यही राय थी कि श्री लाल बहादुर शास्त्री देश के प्रधानमन्त्री बनें।

कांग्रेस संसद दल ने जनता की इस इच्छा का आदर किया। २ जून को सुबह संसद भवन के बडे कमरे में दल की बैठक हुई। शास्त्रीजी हमेशा की तरह शान्त और गम्भीर होकर कोने की एक कुर्सी पर बैठे रहे। दल ने जब सर्वसम्मति से उन्हें अपना नेता चुना तो सारा कमरा तालियों की गङगङाहट और "नेहरू अमर हैं" के नारों से गूंज उठा।

शास्त्रीजी को कोने की कुर्सी से मंच पर बुलाया गया। फिर तालियाँ बजीं और सब एक-एक करके उन्हें बधाइयाँ देने लगे।

शास्त्रीजी ने बहुत ही नम्रता से सबका अभिवादन किया और कहा, "मैं सबके प्रति आभारी हूँ। हमें अपने दिवंगत नेता श्री जवाहरलाल नेहरू के कार्यों को पूरा करना है। नेहरूजी भारत और संसार के सबसे महान नेता थे। उनके निधन से भारत को बङा भारी आघात पहुँचा है। हमें

उनके काम को पूरा करना है। हमें देश की एकता को बनाए रखना है। नेहरूजी की आत्मा हमेशा हमें रास्ता दिखाती रहेगी। हमें उनके जीवन से प्रेरणा और शक्ति मिलती रहेगी ।"

श्रीमती इन्दिरा गांधी का नाम लेते ही शास्त्रीजी रो पड़े। वे नेहरूजी का बहुत सम्मान करते थे और इन्दिराजी से बहुत स्नेह । उन्होंने भर्राई आवाज में कहा, "इन्दिराजी का हमसे बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। आप सब इससे सहमत होंगे कि उनसे हमारा सम्बन्ध बना रहे । वह हम सबके लिए शक्ति का स्रोत रहेंगी ।"

शास्त्रीजी ने फिर कहा, "देश का लक्ष्य पहले से निर्धारित है। हमारा लक्ष्य समाजवाद है। हमें उसे तेजी से लाना है।.."

प्रधानमन्त्री का पद ग्रहण

उसी दिन पूरे देश में इसकी खबर फैल गयी । जनता को खुशी हुई कि शास्त्रीजी उनके प्रधानमन्त्री चुने गये हैं। जनता को विश्वास हो गया कि उसके प्यारे नेता जवाहरलाल नेहरू ने देश की उन्नति के लिए जो रास्ता दिखाया था, शास्त्रीजी उसी रास्ते पर चलेंगे ।

उन दिनों देश भर में नेहरूजी के निधन का शोक मनाया जा रहा था । शास्त्रीजी हमेशा से नेहरूजी के भक्त और अनुयायी रहे । उन्हें नेहरूजी के निधन से बहुत दुख हुआ था। इसलिए वह नहीं चाहते

थे कि नेहरूजी के निधन के शोक के समय वह प्रधानमन्त्री का पद सँभालें । अतः उन्होंने निर्णय किया कि ८ जून को इलाहाबाद के संगम में नेहरूजी की भस्मी प्रवाहित करने के बाद ही वह प्रधानमन्त्री पद की शपथ लेंगे ।

शास्त्रीजी ६ जून को इलाहाबाद से वापस लौटे ।

श्री गुलजारीलाल नन्दा के साथ शास्त्रीजी

१० जून को उन्होंने राष्ट्रपति के सामने प्रधानमन्त्री पद की शपथ ली।

११ जून को शास्त्रीजी ने आकाशवाणी से देश के नाम सन्देश दिया । उसमें उन्होंने कहा, "मैं जानता हूँ मेरा उत्तरदायित्व बहुत बङा और गम्भीर है। यह भार मुझे विनम्र रहने के लिए विवश करता है। अपने देश की जनता के प्रति मैं अपना प्रेम तथा आदर प्रकट करता हूँ और इतना ही कह सकता हूँ कि जितनी मेरी शक्ति है, उसे मैं पूरी तरह जनता की सेवा में लगाऊँगा। हमारे नेता जवाहरलालजी अभी ही हमसे विदा हुए हैं। वह अध्याय समाप्त हुआ, जिसे गांधीजी ने आरम्भ किया था और जिसे जवाहरलाल जी ने बाँधा तथा मजबूत किया । जो मजबूत नींवें वह छोङ गये हैं, उस पर हमें नया निर्माण करना है। यदि गांधीजी और जवाहरलालजी का सच्चा स्मारक बनाना है तो भारत के हर स्त्री और पुरुष को कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ना होगा। यह हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम ऐसे भारत का निर्माण करें, जो सुश्री हो, बलवान हो और जिसकी स्वतन्त्रता पर आंच न आ सके।"

और इस तरह श्री लालबहादुर शास्त्री आज हमारे प्रधानमन्त्री हैं। आज देश की बागडोर उनके हाथ में है। जो शास्त्रीजी पहले गांधीजी और नेहरूजी के सिपाही थे, वह आज उनके काम को आगे बढ़ाने के लिए हमारे सिपहसालार हैं, हमारे नेता हैं, हमारे देश के कर्णाधार हैं।

५ | गुणों की खान

प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री गुणों की खान हैं, उनमें कोई व्यसन नहीं है। १९४२ तक तो उन्होंने चाय तक नहीं पी। चाय पीने की आदत उन्हें १९४२ में जेल में पडी। सिगरेट आदि व्यसनों से वह कोसों दूर हैं। शास्त्रीजी अपने हाथों से सूत कातते हैं और उसी का कपड़ा पहनते हैं। शास्त्रीजी ने नेपाल को छोड़कर बाकी किसी देश की यात्रा नहीं की। उन्होंने कभी किसी अंग्रेजी स्कूल में भी नहीं पढ़ा। फिर भी उनका ज्ञान अगाध है।

वे बहुत मृदुभाषी हैं। शायद ही कभी किसी ने उन्हें जोर से बोलते देखा हो या गुस्से में आते देखा हो।

शास्त्रीजी का हृदय मोम की तरह कोमल है, लेकिन अपने संकल्प में वह चट्टान की तरह अडिग हैं।

वह अत्यन्त ईमानदार और त्यागी पुरुष हैं। उनके गुणों को देख- कर नेहरूजी ने कहा था- "शास्त्रीजी से अच्छा साथी पाना मुश्किल है। वह बड़े ईमानदार और वफादार आदमी हैं। वह बड़े आदर्शवादी हैं।"

वीर माता के वीर पुत्र

शास्त्रीजी वीर माता के वीर पुत्र हैं। छात्र जीवन में जब उनके

पास गंगापार जाने के लिए नाव के पैसे न होते, तो वह बड़ी वीरता से तैरकर गंगा पार कर जाते।

१६ वर्ष की उम्र में ही वह स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। उन्होंने जेल जाने पर पुलिस के डंडे खाने या अंग्रेजों की गोली खाने की कभी परवाह नहीं की। वह वीर सिपाही की तरह स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेते रहे।

शास्त्रीजी की माता श्रीमती रामदुलारी हमेशा उनके लिए प्रेरणा का स्रोत रही हैं। अपने पुत्र को हमेशा खुशी हुई है। अब वह ८१ देश-सेवा का कार्य करते देखते उन्हें वर्ष की हैं और चाहती हैं कि उनका पुत्र देश की उन्नति के लिए जान पर खेलकर सब कुछ करता रहे।

शास्त्रीजी जब प्रधान मन्त्री के पद के लिए चुने गये, तब उनकी माताजी मुंगेर से दिल्ली आईं। रास्ते में कुछ लोग उनसे मिले। उन्हें बधाई दी और उनके विचार पूछे।

माताजी ने अपने विचार प्रकट करते हुए उत्तर दिया, "मैं लालबहादुर से चाहती हूँ कि जान चली जाए तो जाए, मगर देश बना रहे।"

धन्य है वह माता, जो इतनी देशभक्त है, और धन्य है वह पुत्र, जिसने ऐसी माता की कोख से जन्म लिया।

सरलता की मूर्ति

शास्त्रीजी स्वभाव के जितने सरल हैं, उतनी ही सादगी से रहते भी हैं। जनवरी, १९५५ की एक घटना सुनिए।

उस समय शास्त्रीजी परिवहन और रेलमन्त्री थे। वह मदुरा रेल- स्टेशन पर अपने खास विश्राम घर में आराम कर रहे थे। तभी एक

अफसर आया । उसने शास्त्रीजी को मामूली कपङों में देखकर समझा कि यह शास्त्रीजी का कोई कर्मचारी है। अतः उसने उनसे जिला मजिस्ट्रेट का सन्देश बताया और कहा कि इसे वह मन्त्री महोदय को बता दें।

शास्त्रीजी ने उत्तर दिया, "अच्छा मैं कह दूंगा और रेलमन्त्री जो कुछ कहेंगे उसे भी वापस आकर आपको बता दूंगा।"

अफसर खुश होकर वापस लौट रहा था कि उसे एक पत्रकार दिखाई दिया। उसने पत्रकार से पूछा कि रेलमन्त्री किस कमरे में ठहरे हुए हैं।

पत्रकार ने उत्तर दिया, "महाशय, आप जिनसे बात कर रहे थे, वही तो रेलमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री हैं।"

बेचारा अफसर अवाक् रह गया, उसे तब यह मालूम हुआ कि शास्त्रीजी इतने सीधे-सादे, सरल और नम्र हैं।

सिद्धान्त के पक्के

लेकिन, सरल और नम्र होते हुए भी शास्त्रीजी कठोर चट्टान की तरह सिद्धान्त के पक्के हैं। वह जो निर्णय कर लेते हैं, उस पर अडिग रहते है । वह कायदे-कानून का कठोरता से पालन करते हैं।

उन दिनों शास्त्रीजी नैनी जेल (इलाहाबाह के निकट) में थे। इस बीच उनकी पुत्री सख्त बीमार पङ गयी । साथियों ने उन्हें सलाह दी कि वह पैरोल पर चले जाएँ और अपनी पुत्री को देख लें।

जेल में नजरबन्दों के लिए यह नियम होता है कि यदि उनका कोई सगा-सम्बन्धी सख्त बीमार हो या कोई बहुत ही आवश्यक काम हो तो जेल से कुछ दिन के लिए छुट्टी दे दी जाती है। इसे 'पैरोल' कहते हैं।

जिलाधीश ने शास्त्रीजी से कहा, "यदि आप यह लिखकर दे दें कि आप जेल से बाहर जाकर आन्दोलन नहीं करेंगे, तो मैं पैरोल पर जाने की आज्ञा दे सकता हूँ।"

शास्त्रीजी इस प्रकार लिखकर देना अपने सिद्धान्त के विरुद्ध समझते थे। उन्होंने पैरोल पर जाने से इनकार कर दिया। देश-सेवा में बह पुत्रो का मोह तक भूल गये।

आखिर जिलाधीश को ही झुकना पङा। उसने बिना किसी शर्त पर शास्त्रीजी को १५ दिन के पैरोल पर छोङ दिया।

शास्त्रोजी घर पहुँचे। लेकिन तब तक उनकी प्यारी पुत्री चल बसो थो। वह उसे जीवित न देख सके। दुखी मन से उन्होंने उसकी अन्तिम क्रिया की और फिर जेल वापस जाने के लिए तैयार हो गये।

कुछ लोगों ने कहा, "अभो तो आप १५ दिन रह सकते हैं।"

शास्त्रीजी ने उत्तर दिया, "जिस काम के लिए मैं पैरोल पर छूटा था, वह खत्म हो गया है। इसलिए सिद्धान्तः मुझे अब वापस चला जाना चाहिए।

और इस तरह वह अपने शोकमग्न परिवार को छोङकर उसी दिन जेल वापस चले गये।

कानून और सिद्धान्त के इतने पक्के हैं वह।

मोम की तरह कोमल

लेकिन इसके माने ये नहीं हैं कि वह दिल के कठोर हैं। उनका दिल तो मोम की तरह कोमल है। वह स्वयं बङे-से-बङा कष्ट सह लेंगे, लेकिन दूसरे को जरा भी कष्ट नहीं होने देंगे।

उन दिनों शास्त्रीजी गृह मन्त्री थे। सभी राज्यों के मुख्य मन्त्रियों

से लेकर साधारण लोग तक अपनी समस्याएँ लेकर उनके पास पहुँचते थे। शास्त्रीजी बड़ी शालीनता से उनकी समस्याएँ सुनते और उन्हें उचित सलाह देते। कभी-कभी तो उन्हें पाँच-पाँच सौ व्यक्तियों से मिलना पड़ता था। वह रात के बारह-एक बजे तक इन्हीं कामों में उलझे रह जाते।

एक बार पंजाब के कुछ लोग उनसे मिलने आये। रोज की तरह शास्त्रीजी के यहाँ पहले ही से काफी लोग मिलने के लिए बैठे थे। अतः वे एक कमरे में बैठ गये।

काफी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद भी जब उनकी बारी नहीं आई तो वे खड़े हो गये। उन्होंने शास्त्रीजी के सचिव से कह दिया कि उन्हें बस पकड़कर रेल-स्टेशन जाना है और वहाँ से पंजाब के लिए आज रात की गाड़ी पकड़नी है। यह कहकर वे बस रुकने की जगह चल दिये।

इसके कुछ ही देर बाद शास्त्रीजी खाली हुए। उन्होंने सचिव से पूछा कि पंजाब के लोग कहाँ हैं? सचिव ने बता दिया कि वे काफी देर प्रतीक्षा करके अभी-अभी बस पकड़ने चले गये हैं। आज ही रात उन्हें पंजाब लौट जाना है।

शास्त्रीजी के दिल को ठेस पहुँची। इतनी दूर से वे मिलने आये थे, काफी देर बैठे रहे, फिर भी नहीं मिल पाये। उनका मोम सा दिल पिघला।

वह पैदल ही बस ठहरने की जगह की ओर दौड़ पड़े। सब आश्चर्य से उनकी ओर देखते रह गये।

सौभाग्य से वे लोग अभी बस स्टैण्ड पर ही खड़े थे। शास्त्रीजी उनके पास पहुँचे, उनसे क्षमा मांगी और काफी देर तक उनसे बातें कीं। तब कहीं शास्त्रीजी को सन्तोष हुआ।

मजदूरों के साथी

शास्त्रीजी की यह विशेषता है कि वह जिनसे मिलते हैं, उनके साथ उन्हों की तरह के हो जाते हैं। यही कारण है कि अपरिचित व्यक्ति भी उनके पास जाकर परिचित हो जाता है और दिल खोलकर उनसे बात करता है। वह किसानों के साथ किसान और मजदूरों के साथ मजदूर बन जाते हैं।

एक बार वह नैनी (इलाहाबाद के निकट) की उद्योगपुरी देखने गये। वहाँ नये कल-कारखाने देखकर उन्हें खुशी हुई। उनके स्वागत के लिए एक कारखाने की छत पर प्रबन्ध किया गया था। शास्त्रीजी वहाँ पहुँचे।

वहाँ शास्त्रीजी ने देखा कि कारखाने के बडे-बडे लोग कुसियों पर बैठे हैं और नीचे दरी पर मजदूर।

शास्त्रीजी के पहुँचते ही सबने खडे होकर उनका अभिवादन किया। शास्त्रीजी ने मुस्कराकर सबको हाथ जोडे और मजदूरों के बीच दरी पर जा बैठे।

सब आश्चर्य से उनकी ओर देखते रहे। कुर्सी पर बैठे बडे-बडे लोग बहुत खिसियाये। उन्हें क्या मालूम कि महान व्यक्ति कहीं भी बैठे, वह हमेशा महान रहता है। शास्त्रीजी तो जनता के आदमी हैं, जनता के प्यारे हैं। जनता के बीच बैठकर तो उनकी शोभा और अधिक बढ़ जाती है।

घमण्ड से कोसों दूर

शास्त्रीजी घमण्ड से कोसों दूर हैं। वह ऊँचे-ऊँचे पदों पर रहे, लेकिन उन्होंने कभी भी इसका गर्व नहीं किया। वह हमेशा की तरह नम्र और सरलता की मूर्ति बने रहे।

जब शास्त्रीजी गृह मन्त्री थे, तब उनके एक मित्र ने सलाह दी, "शास्त्रीजी आप भी दिल्ली में एक मकान बनवा लीजिए।"

शास्त्रीजी ने बड़ी सादगी से कहा, "अरे भाई, जब हम दिल्ली में नहीं रहेंगे, तब हमें कौन पूछेगा ? इलाहाबाद में कम-से-कम पुराने दोस्त सलाम तो ले लेंगे।"

साहित्य-प्रेमी

शास्त्रीजी ने काशी विद्यापीठ में डॉ० भगवानदास, डॉ० सम्पूर्णा- नन्द और आचार्य नरेन्द्रदेव जैसे विद्वानों से पढ़ा। दर्शनशास्त्र और साहित्य से उनका विशेष लगाव रहा है।

शास्त्रीजी जब नैनी जेल में थे तब उन्होंने पोलैण्ड की प्रसिद्ध वैज्ञानिक नारी मादाम क्यूरी की जीवनी का अनुवाद किया था।

लखनऊ के प्रसिद्ध उर्दू कवि पण्डित दयाकृष्ण 'मंजूर' ने मिर्जा गालिब पर पुस्तक लिखी थी। शास्त्रीजी ने १९४६ में उसकी भूमिका लिखी। इस भूमिका से पता चलता है कि शास्त्रीजी को उर्दू के श्रेष्ठ कवि गालिब और उनकी कविता का कितना अधिक ज्ञान है।

बच्चों से प्यार

चाचा नेहरू की तरह शास्त्रीजी को भी बच्चों से बहुत प्यार है। उनका अपना परिवार भी भरा-पूरा है। ८१ वर्ष की वृद्ध माता हैं, पति के चरण-चिह्नों पर चलने वाली पत्नी हैं, चार पुत्र हैं, दो पुत्रियाँ और छह पोते-पोतियाँ हैं।

शास्त्रीजी के प्रधानमन्त्री बनने के बाद, छह वर्ष के एक बच्चे ने उनसे पूछा, "क्या आप भी बच्चों को उतना ही प्यार करते हैं, जितना

चाचा नेहरू करते थे ?"

शास्त्रीजी ने उस बच्चे को प्यार करते हुए उत्तर दिया, "नेहरूजी तो बहुत बडे नेता थे, मैं उनकी किसी भी मामले में बराबरी नहीं कर सकता, लेकिन बच्चों को प्यार जरूर करता हूँ।"

शास्त्रीजी के पास देश के कोने-कोने से बच्चों के पत्र आते हैं। अनेक बच्चे उन्हें 'चाचा शास्त्री' लिखते हैं।

एक बच्चे ने लिखा- "चाचा नेहरू बच्चों को बहुत प्यार करते थे। मैं आशा करता हूँ कि आप उनकी तरह बच्चों को बहुत प्यार किया करेंगे।" एक अन्य लडके ने पेंसिल से उनका चित्र बनाकर भेजा। अनेक बच्चों ने उनसे फोटो माँगा।

शास्त्रीजी को बच्चों से बहुत प्यार है। वह भरसक प्रयत्न करते हैं कि बच्चों की सभी माँगे पूरी हो जाएँ।

विनोदप्रियता

शास्त्रीजी अपनी मीठी वाणी और विनोद के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध है। वह जितने गम्भीर विचारवान हैं, उतने ही विनोदप्रिय भी। बात-बात पर हँसना-हँसाना उनका स्वभाव है।

एक बार अशोक नगर में उन्हें चाँदी से तोला गया। इस अवसर पर हजारों लोग उपस्थित थे और अपने प्रिय नेता का भाषण सुनने को भ्रातुर थे।

शास्त्रीजी नाटे कद के पतले-दुबले आदमी हैं, उनके साथ संसद- सदस्य श्री राम सहाय पाण्डे भी थे, जो काफी भारी भरकम हैं।

तुलादान के बाद शास्त्रीजी ने कहा, "अशोक नगर वाले बडे होशियार हैं। अरे भई ! अगर चाँदी से तोलना था तो इस मोढ़े आदमी

अपने परिवार के बच्चों के साथ शास्त्रीजी

को (पाण्डेजी को) तोलते।"

इसी तरह एक बार शास्त्रीजी को बच्चों के समारोह में बुलाया गया।

समारोह में भाषण देते हुए शास्त्रीजी ने मजाक करते हुए कहा, "मुझे इस समारोह में शायद इसलिए बुलाया गया है, क्योंकि मेरा कद भी बच्चों जैसा है।"

सुलझे विचार

शास्त्रीजी विनोदप्रिय होने के साथ-साथ बहुत सुलझे विचारों के हैं। वह अपना कर्तव्य भली भाँति जानते हैं और चाहते हैं कि अन्य लोग भी अपने कर्तव्यों का पालन करें।

शासकों के बारे में उन्होंने कहा- "हम लोग जो सरकार में हैं, प्रशंसा और वाहवाही के आदी हो जाते हैं। परन्तु जो लोग शासन चलाते हैं, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि उनमें अनेक कमियाँ हैं और उनके शासन में भी अनेक खामियाँ रहती हैं।"

जनता और शासन के बारे में उन्होंने कहा- "जो लोग शासन चलाते हैं, उन्हें लोगों के विचारों का ध्यान रखना चाहिए। अन्ततः जनता के हाथ में ही शासन की बागडोर रहती है।"

देश के हित के बारे में उन्होंने कहा- "देश का हित सबसे ऊपर है। हमें देश में धीरे-धीरे ऐसा वातावरण पैदा करना है, जिससे विभिन्न राज्यों में रहने वाली विभिन्न जातियाँ शान्तिपूर्वक रह सकें और हमारे देशवासियों में देशभक्ति तथा राष्ट्रीयता की भावना पैदा हो।"

अपने लक्ष्य के बारे में शास्त्रीजीने कहा - "समाजवाद हमारा लक्ष्य है। हमें उसे तेजी से लाना है। आर्थिक समस्याएँ हमारे सामने खडी हैं।

गरीबी देश की सबसे बडी समस्या है। हमें उससे लड्ना है। लोगों को सुखी बनाना हमारा कर्तव्य है।"

भारत माता के लाड्ले सपूत नेहरूजी के बारे में उन्होंने कहा- "श्री जवाहरलाल नेहरू हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी प्रेरणादायक वाणी हमारे हृदय में हमेशा गूंजती रहेगी।"

लोकतन्त्र के बारे में उन्होंने कहा- "लोकतन्त्र हमारे देश की पुरानी परम्परा रही है। भारत सदा व्यक्ति के प्रति आदर और सम्मान की भावना से प्रेरित हुआ है। विभिन्न विचारधाराओं के रहते हुए भी सहनशीलता भारत का प्रधान गुण रहा है।"

ऐसे हैं हमारे प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री। सरलता में गंगा की तरह सरल और विचारों में हिमालय की तरह ऊँचे। हृदय से मोम की तरह कोमल और सिद्धान्तों में चट्टान की तरह अडिग।

एक बार राष्ट्रपिता गांधी ने नेहरूजी के बारे में कहा था- "राष्ट्र उनके हाथों में सुरक्षित है।" इसी तरह आज हम कह सकते हैं कि "राष्ट्र शास्त्रीजी के हाथों में सुरक्षित है।"